Living the Lotus

5
2021
VOL. 188

Buddhism in Everyday Life

Founder's Reflections

हमारे अभ्यास के दो मॉडल

भले ही हम स्वयं आश्वस्त है कि हमने मूल रूप से देशना में महारत हासिल कर लिया है, लेकिन, जैसे ही हमें वास्तविक जीवन में विभिन्न प्रकार के समस्याओं का सामना होता है, हम बतंगड़ का रोना रोते हैं और ठीक उसी स्थान पर पहुँच जाते हैं, जहाँ हम अपने अभ्यास के प्रारंभ के पूर्व थे।

कर्म का सिद्धान्त बौद्ध धर्म का एक मूलभूत शिक्षा है, जिसमें कहा गया है कि सभी चीजें कारणों के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध से उत्पन्न होती हैं। "कारण" मुठभेड़ है। इसलिए, यह कहना उचित है कि हमारे आध्यात्मिक अभ्यास मुठभेड़ों को सकारात्मक दिशा में मोड़ता है।

ऐसा करने का एक मॉडल पुण्डरीक सूत्र का 12. देवदत्त परिवर्त में दिखाया गया है, जो हमें सिखाता है कि हमें चाहे कितनी भी अप्रिय स्थिति का सामना करना पड़े या हमें जिन लोगों का सामना होता है वे हमसे कितने भी असहमत हैं - हमें उन सभी को शिक्षक रूप में स्वीकारना चाहिए, जो वास्तव में सच्चा अभ्यासकर्ता बनने में हमारी सहायता कर सकते हैं।

एक अन्य मॉडल बोधिसत्व सदापरिभूत का है, जो लोगों में निहित बुद्ध स्वभाव का सम्मान करते थे, जिसका उल्लेख परिवर्त- 20 में हुआ है। यह परिवर्त हमें बताता है कि कोई व्यक्ति चाहे हमें कैसा भी दिखाई दे, हमें उनको भावी बुद्ध के रूप में स्वीकारना चाहिए, बोधिसत्व सदापरिभूत की सम्मान भावना के अनुरूप, जिन्होंने सभी लोगों का सम्मान किया।

जापानी भिक्षु निचिरेन (1222-82) ने अक्सर "बुद्धत्व के बीज" जैसे वाक्यांश का प्रयोग करते है। हम सभी में बुद्धत्व के बीज अन्तर्निहित है, लेकिन जब तक हम उसमें जल नहीं देते और उसमें सूर्य का प्रकाश नहीं पड़ता हैं, तब तक हम उस बीज को अंकुरित होने, बढ़ने और खिलने में मदद नहीं कर पाएँगे।

हर बार जब आप कठिनाइयों में दौड़ते हैं, तो इन दो मॉडलों को याद करें, अपनी परेशानियों को शुभ परिस्थितियों के रूप में स्वीकार करें, और दूसरों के साथ अपने मुकाबलों को सकारात्मक बनाने का लक्ष्य रखें। ऐसा करने से, आप धीरे-धीरे बुद्ध की देशना के वास्तविक पालनकर्ता बन जाएँगे।

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 10 (कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी. 72-73

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

Living the Lotus
Vol. 188 (May 2021)

Senior Editor: Keiichi Akagawa
Editor: Kensuke Osada
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international
@kosei-kai.or.jp

"लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

President's Message

समझदारी से जीना

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

बिना किसी भेद-भाव के

जब हम सुबह उठते हैं, उस समय से बिस्तर पर जाने के पूर्व तक के अपने कार्यों को अनजाने में महत्वपूर्ण और गैर-महत्वपूर्ण में विभाजित करते हैं, क्या हम ऐसा नहीं करते हैं? हम सूत्र पाठ की उपेक्षा नहीं कर सकते, लेकिन पारिवारिक अभिवादन आदि बेनामी हो जाता है।

"इस क्षण, सबसे महत्वपूर्ण चीज आपका मन है।" ऐसा ज़ेन मास्टर दोक्यो इतान, a.k.a शोजु रॉजिन (1642–1721) ने घोषित किया। लेकिन सुबह उठना, कपड़े पहनना, अपना चेहरा धोना, परिवार के हर सदस्यों का अभिवादन करना, और उसके बाद, सूत्र पाठ करना, काम पर जाना, और व्यापार के सम्बन्ध चर्चा करना - इनमें से हर एक क्रिया "सबसे महत्वपूर्ण है," दूसरे शब्दों में, हमें इन कार्यों में से प्रत्येक के प्रति स्वयं को अच्छी तरह से समर्पित रखना चाहिए और उन सभी को समान विचार के साथ देखना चाहिए।

हालाँकि, ऐसा करना कठिन है, केवल इसलिए नहीं कि हम व्यस्त हैं, बल्कि इसलिए कि हम चीजों के बारे में कुछ अलग करते हैं। सच में, हमारे पास जो कुछ भी है उसका महत्व और मूल्य है, लेकिन हमें लगता है कि कुछ चीजें अधिक प्रयास के लायक हैं, इसलिए हम उन पर अधिक ध्यान देते हैं। या फिर हम कुछ को सुविधा से करने के लिए अलग रखना तय करते हैं, - लेकिन वे निष्ठाहीन शब्दों और कार्यों की अभिव्यक्ति बन जाते हैं, क्या वे नहीं ?

मुझे एक मुहावरा बताया गया है कि "फूलों की सुंदरता की कोई श्रेणी नहीं है।" यदि हम बिना किसी सतही निर्णय से चीजों को पसंद और नापसंद करते हैं, तो हम उन सभी को महत्वपूर्ण और सार्थक मान सकते हैं।

शोजु रोजिन में "शोजु" समाधि का अनुवाद है, जिसका अर्थ है अपने स्वयं के विचारों को पीछे छोड़ना और अपने मन को एक चीज पर केंद्रित करना है। "आज के इस क्षण में," कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, हमें इस बारे में भूलने की आवश्यकता है कि क्या सुविधाजनक है।

अन्य लोगों की सोच

अब दूसरे दृष्टिकोण से सार्थक विचार से जीने के सबन्ध सोचना है। अपने घर से एक उदाहरण लें, सर्दियों में गर्म पानी को बहने में कुछ समय लगता है, जिसका अर्थ है कि थोड़ी देर से नल से ठंडा पानी निकलता है। इसलिए, इसे बेकार बहाने के बजाय, हम इसे एक बर्तन में इकट्ठा करते हैं और इसे आर्दता बढ़ानेवाले यंत्र में उपयोग करते है। इस तरह की संसाधनशीलता - पानी की थोड़ी मात्रा को भी व्यर्थ नहीं जाने देना - छोटी सी क्रिया का एक उदाहरण है, जो सोच समझकर जीने में सहायता करता है। और यह न केवल पानी के बारे में सच है,: उन चीजों पर थोड़ा ध्यान देना है जिन पर आमतौर से हमारा ध्यान नहीं जाता है, उनका बेहतर उपयोग कर सकते हैं।

यहाँ तक कि तांका और हाइकू जैसी छोटी कविता को पढ़नेवाली आदतें, हमें अपने दैनिक जीवन के हर पल में परिवेश पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रशिक्षित कर सकता है।

यहाँ ताचिबाना आकेमी (1812–68) की एक कविता है:

"जब नए पत्ते निकलते हैं
कोई फर्क नहीं पड़ता
आप किस पर्वत को देखते हैं
किस तरह के पेड़ को देखते हैं
देखने में सब एक सुंदर दृश्य है।"

यह हंसमुख कविता वर्तमान मौसम को दर्शाती है। चार श्रृतुओं के रंगों और परिवर्तनों का अवलोकन कवि करता है, हमारे सामान्य जीवन में हँसी-खुशी का अनुभव कराता है और इस समय को पोषित और मूल्यवान बनाने का मन बना रहा है।

हालॉकि, यदि हमारे पास केवल इस बात की स्पष्ट धारणा नहीं है कि क्या सोच समझकर जीने का अर्थ है, तो हमारे आदतन जीवनशैली में वह जाने की संभावना है। किसी समय किसी जगह हम कैसा व्यवहार तथा हरकत करते हैं, वह स्वाभाविक सोच समझ बन जाता है।

पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त-24 में बोधिसत्व गद्गदस्वर, द्वारा प्राप्त कई समाधियों का वर्णन है। इनमें से हर एक समाधि का आधार एक बोधिसत्व व्रत है, जैसेकि, "मैं न केवल उन लोगों को मुक्त करूँगा जिनके साथ मेरा संबंध है, बल्कि उन लोगों को भी है जिनके साथ मेरा अभी तक सम्बन्ध नहीं हुआ है," या - जिस तरह टार्च अपने आसपास को प्रकाशित करता है, मैं लोगों को ज्ञान के उज्ज्वल प्रकाश के बारे में बताऊँगा।

दूसरे शब्दों में, चाहे हम आस-पास के किसी व्यक्ति की मदद करने के लिए या दूर देश में किसी को खुशी लाने का संकल्प लेते हैं, हम मदद नहीं करते हैं, बल्कि अपने जीवन को सोच समझकर जीते हैं जब हम अपना चेहरा धोने जैसी एक भी क्रिया के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं।

यह मानसिक स्थिति है जिसमें हम हर चीज को वैसा ही स्वीकार करते हैं, जैसाकि हम उसे देखते है, "देखने में मनोरम।" और जब तक हम ऐसा करते हैं, हमारा दिन हमेशा खुशी की भावनाओं से भरा रहेगा।

From *Kosei*, May 2021.

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः
प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

निक्क्यो निवानो

सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र
परिवर्त-27: शुभव्यूहराजपूर्वयोग

यहाँ हमारे पास शुभव्यूहराज, उनकी पत्नी, विमलदत्त, और उनके दो पुत्रों, राजकुमार विमलगर्भ एवं राजकुमार विमलनेत्र की कहानी है, जो अतिपूर्व के सुदूर अतीत में हुए थे।

शुभव्यूहराज की कहानी

राजा की पत्नी और दोनों पुत्र बुद्ध धर्म के अनुयायी थे और राजकुमार चाहते थे कि राजा अपने पूर्व से ग्रहित धर्मदेशना को त्याग दें और इस दुर्लभ उत्कृष्ट धर्मदेशना को धारण कर लें। जब राजकुमारों को यह सुनने को मिला है कि जलधरगर्जितघोषस्वरनक्षत्रराज- संकुसुममिताभिज्ञ नामक बुद्ध पुण्डरीक सूत्र के दुर्लभ उत्कृष्ट धर्मदेशना का प्रचार प्रसार कर रहे हैं, वे राजा को इसे सुनाने को उत्सुक हुए। उन्होंने माता से विचार विमर्श किया। माता ने सलाह दिया कि अपनी अलौकिक शक्तियों के द्वारा चमत्कारिक प्रतिहार्यों का प्रदर्शन कर उनके हृदय को परिवर्तित करने का प्रयास करना चाहिए।

इसलिए, राजकुमारों ने राजा के सामने ऊपर आकाश में छलांग लगाकर चलने लगते हैं। वे अपने सिर और पैरों से आग और पानी उगलते हैं, पृथ्वी में स्वछन्द गोता लगाते हैं, और सभी प्रकार की अविश्वसनीय चीजें करते हैं। राजा चकित हो जाते हैं, और जब वे उनसे पूछते हैं कि उन्होंने ऐसी पारलौकिक शक्तियाँ कहाँ से सीखीं है, तो वे उत्तर देते हैं कि उनके गुरु बुद्ध जलधरगर्जितघोषस्वरनक्षत्रराजसंकुसुममिताभिज्ञ है, जो पुण्डरीक सूत्र का उपदेश कर रहे हैं। राजा तत्क्षण उस बुद्ध को देखने की इच्छा प्रकट करते है, और अत्यानन्दित राजकुमारों ने अवसर खोये विना ही अपनी माता के पास गये और उनसे घर छोड़ने की अनुमति लेकर स्वयं को बुद्ध के अधीन मार्ग का अध्ययन करने के लिए समर्पित कर दिया।

राजकुमारों के प्रभाव से न केवल राजा, बल्कि उनकी पत्नी के साथ-साथ मंत्रियों, दरबारियों, और राष्ट्र के कई अन्य नागरिकों को भी धर्मदेशना सुनने का अवसर मिला। बुद्ध ने शुभव्यूहराज को आश्वासन दिया कि वे बुद्धत्व प्राप्त करेंगे, और राजा ने यह सुनकर अपने भाई को राज्य सौंप दिया और अपने परिचारकों के साथ राजमहल से निकलकर धर्मदेशना के पालन में लग गये।

पुण्डरीक सूत्र का सामना करने में अनुकूल कारण और परिस्थितियाँ हमारा मार्गदर्शन करती हैं

लंबे अभ्यास के बाद, राजा ने विशुद्धमहिमामण्डित समाधि की उच्च अवस्था को प्राप्त किया। उन्होंने बुद्ध को बताया है कि वे पूर्ण रूप से अपने राजकुमार पुत्रों के श्रृणी है। बुद्ध ने इसकी पुष्टि की है कि यह वास्तव में सच है और एक अच्छा मित्र या एक कुशल शिक्षक निश्चित रूप से एक महान कारण और परिस्थितियाँ है, जो लोगों का मार्गदर्शन करते और उनमें परिवर्तन लाते हैं, जिनसे वे बुद्ध को देख सकने और बुद्धज्ञान की प्राप्ति में सक्षम बनते हैं।

वास्तव में, हमें कारण-कार्य सम्बन्ध के महत्व की समझ होनी चाहिए: यह इसलिए है क्योंकि हम पूर्वजन्मों से सद्धर्म का अभ्यास करते आ रहे है और इस जन्म में पुण्डरीक सूत्र का अनुशीलन कर सकते हैं - हमारे कर्मों के पुण्य वह कारण है, जो हमें अच्छे मित्र या कुशल शिक्षक (परिस्थितियाँ) का सामना करने में सक्षम बनाता है।

इसलिए, यदि हम इस जीवन में अधिक से अधिक लोगों में धर्म का प्रचार प्रसार करते हैं, तो हम सबसे बड़ा आश्वासन प्राप्त कर सकते हैं कि हम अगले जीवन में सद्धर्म का सामना करेंगे। यह वह सबक है जिसे हम शुभव्यूहराज की कहानी से सीखना चाहिए और यह इस अध्याय का पहला बिंदु है।

बुद्ध की देशना के माध्यम से हम लोगों को निकट ला सकते हैं

राजकुमारों की अलौकिक शक्तियाँ उनके चरित्र के पूर्ण परिवर्तन को दर्शाता हैं, और बुद्ध की धर्मदेशना के पालन और उसमें श्रद्धाविश्वास के माध्यम से, परिणामस्वरूप, उनके दैनिक जीवन का आचरण बदल गया। अपने पिता में आये परिवर्तनों को दिखलाकर राजकुमारों ने बुद्ध धर्म के मूल्य को प्रदर्शित किया और राजा की परम बुद्धज्ञान की प्राप्ति की कामना को जगाया।

हालाँकि यह महत्वपूर्ण है, जब धर्म के प्रमुख नायक, बुद्ध धर्म को प्रकाश में लाते, उनका वास्तव में प्रदर्शित करना और कार्यरूप देना प्रभावकारी है। यह विशेष रूप से सच है जब, जिन लोगों तक पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं, वे परिवार के सदस्य या सहकर्मी हैं, क्योंकि हम उन्हे धर्म के बारे में कुछ नहीं कह सकते हैं, जब तक कि हमारा आचरण सराहनीय नहीं है। हम दूसरों में बुद्ध धर्म से घृणा या संदेह करने की संभावना उत्पन्न करेंगे । यही कारण है कि राजा की कहानी वह रूप लेती है, जो वे करते हैं।

राजकुमारों की माता बुद्धिमान महिला हैं, जिन्होंने प्रतिहार्यों के प्रदर्शन को प्रोत्साहित किया। उनके पिता, राजा भी अतुलनीय रूप से सराहनीय हैं, क्योंकि वे अपने पूर्वाग्रहों को अलग करने के लिए तैयार हैं और अपने कर्ण को सच्चाई की ओर मोड़ते हैं। सच्चाई को समझने के लिए व्यक्ति के पास इस तरह का मानसिक लचीलापन होना चाहिए।

नायकों का धार्मिक विश्वास

इस परिवर्त में एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि राजा के धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं का देश के आमात्यों और नागरिकों पर प्रभाव पड़ता है। एक व्यावहारिक विषय के रूप में, समाज में नेतृत्व के पदों पर आसीन लोगों के धार्मिक विश्वास के प्रभाव की उपयुक्तता पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

धार्मिक विश्वास मौलिक रूप से एक व्यक्तिगत विषय है, और जब राजनीति या शक्ति का प्रवेश हो जाता है, तो धार्मिक विश्वास के भ्रष्ट हो जाने की संभावना है। लेकिन जब एक सम्मानित नेता को धर्म में सच्चा विश्वास होता है, तो कुछ लोग निश्चित रूप से प्रभावित होते हैं, और इस तरह के प्रभाव में कुछ भी गलत या कलंकित करने जैसा नहीं होता है। वास्तव में, यह बिल्कुल सही तरह का सबसे सकारात्मक प्रभाव है। यही कारण है कि हमें ऐसे लोग चाहिए, जो बड़ी संख्या में लोगों का नेतृत्व करते हैं ताकि वे अपने लिए धार्मिक आस्था का एक उपयुक्त भाव विकसित कर सकें। हालाँकि, ऐसे लोगों के लिए वास्तव में आवश्यक नहीं है कि उन पर अपनी धार्मिक आस्था थोपें, जिनका वे नेतृत्व करते हैं। यदि, उनकी स्वस्थ धार्मिक संवेदनाओं के बदौलत, उनका चरित्र गुणी और प्रतिष्ठित है, तो वे उन लोगों पर सकारात्मक प्रभाव डालने में विफल नहीं हो सकते हैं, जिनका वे नेतृत्व करते हैं। यह इस अध्याय का एक और महत्वपूर्ण सबक है।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्र: प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.216-21.

Director’s Column

हँसी-खुशी का चौराहा

रेवरेन्ट केइइची आकागावा
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

इस महीने के संदेश में प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने अपनी सुविधा के अनुसार निर्णय नहीं करके सोच-समझकर जीने के महत्व को बताया है, ताकि हम अपने जीवन में आने वाली हर चीज का एक महत्वपूर्ण और सार्थक मुठभेड़ बन जाए।

अपने दैनिक जीवन में, हम अक्सर इन बातों के बीच अंतर करते है कि हमारे लिए क्या यह महत्वपूर्ण है या नहीं है, इस आधार पर जो हमें लगता है कि हमारे लिए लाभदायक है। यह अक्सर गलत सिद्ध होता है, क्योंकि सामान्य मनुष्य के रूप में हमारा मन स्वार्थी इच्छाओं के प्रभाव में होता है और अक्सर सही और गलत के बीच भ्रमित रहता है। हमें अपने सोचने के तरीकों की समीक्षा करनी चाहिए और स्वीकार करना चाहिए कि वास्तव में महत्वपूर्ण क्या है। यह हमारे धर्म के पालन में महत्वपूर्ण बिंदु है, और हमारे दैनिक जीवन में इस बारे में जागरूक होना ही हमें हँसी-खुशी का सही रास्ता खोजने में सक्षम बनाता है।

दूसरों को अपने आगे रखना, चिरनूतन आदर्श है, जो रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्यों के धर्म के पालन में मार्गदर्शन करता है। यह हमारे मन के विश्वास को एक नए सिरे से निखारता है, जब हमारे सच्चाई से दूर होने की संभावना होती है।

जैसा कि आप जानते हैं, “सतर्कता” शब्द का अर्थ वर्तमान क्षण को संजोगना और इसे महत्वपूर्ण मानना है, जो समाधि भावना को प्रतिध्वनित करता है, जिसे प्रेसिडेण्ट निवानो ने अपने संदेश में बताया है। अगर हम आंतरिक और बाहरी दोनों तरह से सजग हैं, और मन की गति पर ध्यान केंद्रित रखते हुए अपने आस-पास के सभी लोगों और चीजों के साथ अपने संबंधों को पोषित करते हैं, तो मेरा मानना है कि सभी लोगों के मन में हँसी-खुशी की भावना पैदा होगी।

इस महीने, मुझे आशा है कि हम सभी हर दिन सोच-समझकर जीवन व्यतीत करेंगे और आगे भी परिश्रम के साथ अपने धार्मिक अभ्यास को जारी रखेंगे।

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement

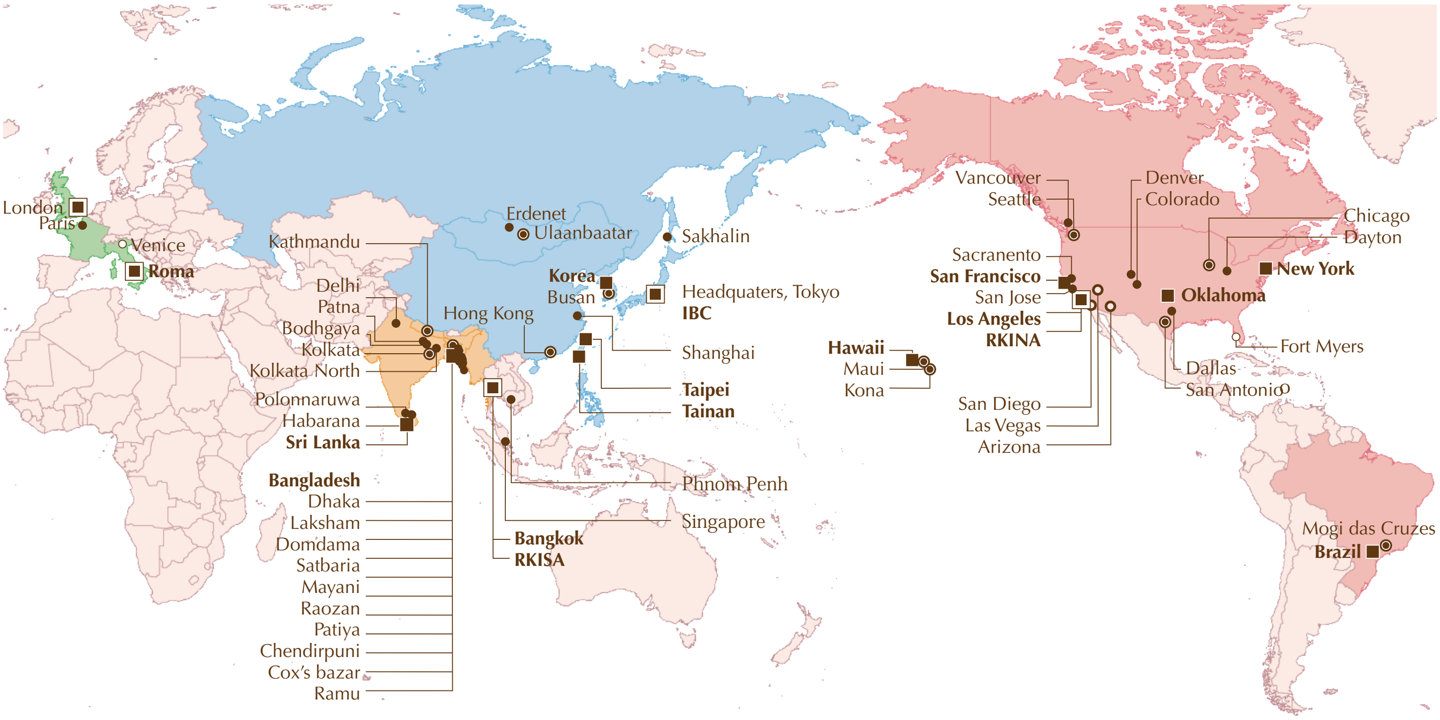

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633
Email: sangha@rkhawaii.org URL: http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1809 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
POBox 33636, CA 90033, USA
TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
Email: rk-la@sbcglobal.net URL: http://www.rkina.org/losangeles.html

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
TEL: 1-650-359-6951 Email: info@rksf.org

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco
Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: http://rk-ny.org

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
TEL: 1-773-842-5654
Email: murakami4838@aol.com URL: http://rkchi.org

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
URL: http://www.rkftmyersbuddhism.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
Email: rkokdc@gmail.com URL: http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver
1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
URL: http://www.rkina-dayton.com

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-269-4567
Email: dharmasa@rksabuddhistcenter.org
URL: http://rksabuddhistcenter.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
(Mail) POBox 692148, San Antonio, TX 78249, USA
TEL: 1-210-558-4430 FAX: 1-210-696-7745
Email: dharmasanantonio@gmail.com
URL: http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
TEL: 1-253-945-0024 Email: rkseattlewashington@gmail.com
URL: http://buddhistlearningcenter.org

Rissho Kosei-kai of Vancouver
Please contact RKINA

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
Email: risho@rkk.org.br URL: http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓国立正佼成会
〒 04420 大韓民国 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓国立正佼成会釜山支部
〒 48460 大韓民国釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會
台湾台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大厦 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會
台湾台南市東区崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center
Please contact Rissho Kosei-kai of Kolkata

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore
Please contact Rissho Kosei-kai International

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Bangkok
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa
Please contact Rissho Kosei Dhamma Foundation

Rissho Kosei-kai Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL: 880-2-41360470

Rissho Kosei-kai Mayani
Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Damdama
Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Satbaria
Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chendhirpuni
Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai Raozan
Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Laksham
Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka
408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar
Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Please contact Rissho Kosei-kai Bangladesh
Rissho Kosei-kai Patiya
Rissho Kosei-kai Ramu
Rissho Kosei-kai Aburkhiln

Buddiyskiy khram "Lotos"
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet
Please contact Rissho Kosei-kai International

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Please contact Rissho Kosei-kai di Rome
Rissho Kosei-kai of Paris
Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai of the UK
29 Ashbourne Road, London W5 3ED, UK
TEL: 44-20-8933-3247 Email: info@rkuk.org URL: https://www.rkuk.org
Facebook: https://www.facebook.com/rkuk.official
Twitter: https://twitter.com/rkuk_official
Instagram: https://www.instagram.com/rkuk_official

Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)
166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: http://www.ibc-rk.org

Published by Rissho Kosei-kai International